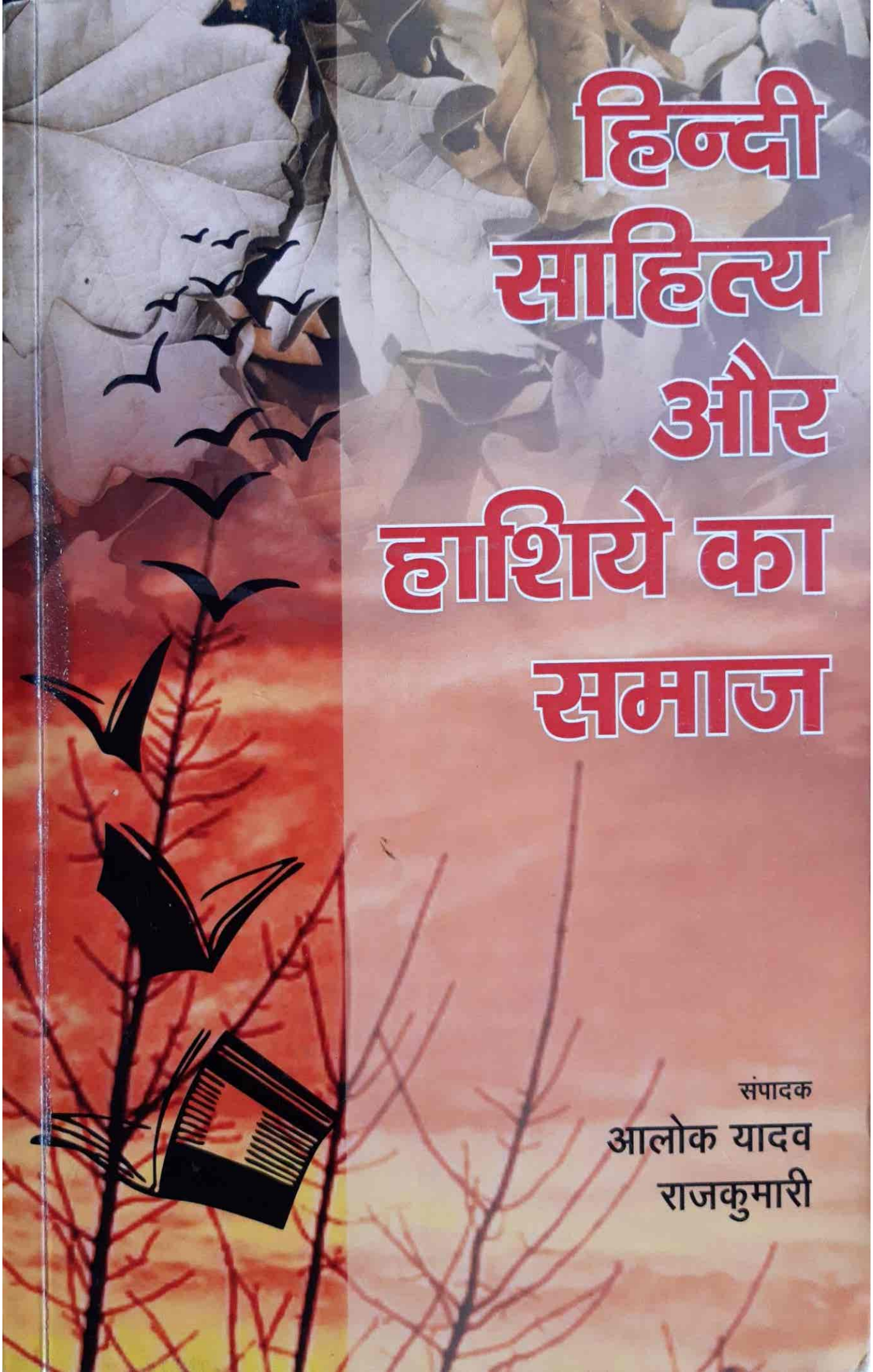

हिन्दी साहित्य और हाशिये का समाज

संपादक
आलोक यादव
राजकुमारी

हिन्दी साहित्य और हाशिये का समाज

आलोक यादव, राजकुमारी

ISBN	:	978-81-928747-5-3
प्रकाशक	:	डेकमार्ट मीडिया सोलूशन्स के–5/101, कैलाशकुंज, इन्दिरा नगर, फेजाबाद रोड, लखनऊ मो० 09415454579
कापीराइट	:	आलोक यादव, राजकुमारी
मोबाइल	:	8004457551
ई–मेल	:	alokyadav.hindi@gmail.com
प्रथम संस्करण	:	2017
मूल्य	:	₹ 249.00
डिज़ाइन	:	अहमद सुहेल
मुद्रक	:	प्रकाश पैकेजर्स 257, गोलागंज, लखनऊ, (उ0प्र) पिन 226018 मो० 09415005540, 9415080712

इस पुस्तक में शामिल लेखों के किसी भी अंश को ज्ञान के किसी माध्यम में प्रयोग करने के पूर्व लेखक से लिखित अनुमति लेना आवश्यक है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।

ISBN 978-81-928747-5-3

9 788192 874753

प्राक्कथन

क्र.	प्राक्कथन	लेखक का नाम	पृ.स
1.	सूफी काव्य में लोक–संवेदना और जायसी	– डॉ0 नज़मुल हसन रिज़वी	07
2.	'आधा गाँव' में मुस्लिम अस्मिता और हिन्दू–मुस्लिम सम्बंध	– रविकान्त	17
3.	दलित स्त्री लेखिकाओं की कहानियाँ	– डॉ. अरविन्द कुमार	49
4.	स्त्री विमर्श के संदर्भ में महिला कथाकार	– पूनम आर्या	57
5.	हाशिये के समाज में स्त्री विमर्श की वैचारिक स्थिति	– अर्चना सिंह	63
6.	पत्रकार यशपाल के साहित्य में समाज	– डॉ0 राधा शर्मा	67
7.	थारू जनजाति के लोकगीत	– डॉ0 सचेन्द्र कुमार	77
8.	लोक साहित्य : प्रसंग और प्रासंगिकता	– डॉ0 शिवशंकर यादव	83
9.	लोक साहित्य : अस्तित्व की चुनौतियाँ	– रेशमा अग्रवाल	89
10.	वैश्वीकरण के भंवर में आदिवासी, भाषा, साहित्य एवं संस्कृति	– डॉ0 प्रीती सिंह	111
11.	राष्ट्रवादयुगीन लेखकों की दृष्टि में दलित स्त्री	– सुरेश कुमार	121
12	इक्कीसवीं सदी की प्रमुख कहानियों में बाज़ारवाद और स्त्री	– राज कुमारी	133
13.	उपन्यास लेखन : समाज और लोकतंत्र	– कु. ममता	145
14	विजयदान देथा की कहानियों में चित्रित जादुई यथार्थवाद	– प्रशान्त कुमार वर्मा	165
15.	वर्तमान परिदृश्य में आदिवासी लोक अस्मिता विषेष संदर्भ: 'सोनफूला' उपन्यास	– प्रिया सिंह	171
16.	दलित विमर्श के सामाजिक सन्दर्भ और समीक्षा दृष्टि	– विनय प्रकाश तिवारी	177
17.	कौसल्या बैसंत्री की आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' का समाजशास्त्रीय विश्लेषण	– प्रदीप कुमार	193
18.	वैष्वीकरण और समकालीन हिन्दी कविता	– सविता	201
19.	स्वतंत्र भारत और 'मुर्दहिया' में अभिव्यक्त दलित जीवन	– विकास चौरसिया	213
20.	भूमण्डलीकरण, पत्रकारिता और हिन्दी अस्मिता	– आलोक यादव	219

ISBN : 978-81-926747-5-3

वैश्वीकरण के भंवर में आदिवासी, भाषा, साहित्य एवं संस्कृति

डॉ० प्रीती सिंह
पी.डी.एफ., हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

"संसार भर के आदिवासी, उपनिवेशवाद तथा तथाकथित विकास के सिद्धान्तों के शिकार हैं।" – भुजंग मेश्राम

वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विश्व स्तर पर रूपांतरण की प्रक्रिया है। इसे एक ऐसी प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है जिसके द्वारा पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते हैं तथा एक साथ कार्य करते हैं। यह प्रक्रिया आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक और राजनीतिक ताकतों का एक संयोजक है।

प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक नोम चॉमस्की का मानना है कि 'वैश्वीकरण' का अर्थ अन्तर्राष्ट्रीय एकीकरण है। इस एकीकरण में भाषा की अहम् भूमिका होगी और जो भाषा व्यापक रूप में प्रयोग में रहेगी, उसी का स्थान विश्व में सुनिश्चित होगा।'

इसमें कोई शक नहीं कि वैश्वीकरण ने शहरी जीवन स्तर में सुधार किया और उसे ऊँचा उठाया है, लेकिन हाल फिलहाल में भूमण्डलीकरण के विरोध में आवाज उठाई जा रही है जो समाज के ऐसे वर्ग से आती है जो तथाकथित जंगली हैं, असभ्य हैं, बर्बर हैं और मूल समाज का हिस्सा नहीं हैं। इनकी आवाज में ऐसी समस्या की पीड़ा है जिसने समाज के शिक्षितों को इनकी आवाज में आवाज मिलने को विवश किया है। सवाल उठता है कि ऐसी क्या वजह है जिसने इस समाज को भूमण्डलीकरण के विरोध में खड़ा किया है जिस वैश्वीकरण से सम्पूर्ण विश्व का लाभ हो रहा है, तरक्की हो रही है, उसके जीवन स्तर में सुधार हो रहा है, आदिवासी समाज उसका विरोध क्यों कर रहा है।

भगवान ग्वाहड़े की पुस्तक "आदिवासी मोर्चा" में कविता "वैश्वीकरण की असली शक्ल" शीर्षक से ज्ञात हो जाता है कि आदिवासी समाज के लिए वैश्वीकरण की छवि नकारात्मक है। आदिवासी प्रकृति से जुड़े हुए हैं, उनकी आत्मा, उनके पूर्वज पेड़ों में बसते हैं, उनका जीवन, उनकी सम्पूर्ण दिनचर्या